Class - B.Com II
Subject - M.F.I (S)
Paper - IV
Topic - International Monetary Fund (I.M.F)
Lecture Sequence - 3
Prepared by :-
Dr Chandreshwar Pd. Sahu
Assistant Professor
Marwari College, Darbhanga
Email - cpsahu5161@gmail.com

अन्तराष्ट्रीय मुद्रा कोष :- ①

अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की स्थापना विश्वव्यापी मंदी और स्वर्णमान के पतन के कारण और परिणाम को देखते हुए किया गया था। प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद विश्व की अर्थव्यवस्था ~~पूरी~~ एकदम खराब हो गयी थी। 1929-30 की महामन्दी और 1931 में अन्तर्राष्ट्रीय ~~स्वर्ण~~ स्वर्णमान के पतन के कारण अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की स्थिति दयनीय हो गयी थी। विश्व के प्रत्येक देश आयातों को कम करने एवं निर्यातों को बढ़ाने के उद्देश्य से अपनी मुद्रा का अवमूल्यन (Devaluation) करने लगा। विभिन्न देशों के बीच अन्तर्राष्ट्रीय मौद्रिक सहयोग के स्थान पर मौद्रिक राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न होने लगी। द्वितीय विश्वयुद्ध के अनेक कारणों में आर्थिक कारण भी था। जब द्वितीय विश्वयुद्ध चल रहा था कि विभिन्न देशों के अर्थशास्त्रियों तथा विशेषज्ञों के दिमाग में युद्ध की समाप्ति के बाद पुनः युद्ध की सम्भावना की चिन्ता सताने लगी।

अमेरिका तथा ब्रिटेन के अगुवाई में अनेक देशों के विशेषज्ञ इस बात पर एक मत होने लगे कि

Scanned with CamScanner

कोई ऐसी स्थायी योजना बनाये जाये जिससे युद्ध की समाप्ति पर अन्तर्राष्ट्रीय मौद्रिक सहयोग से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का विकास और विस्तार हो सके।

1943 में अमेरिका की ओर से दूसरी योजना डॉ० हैरी डेक्सटर ह्वाइट के द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस योजना में अन्तर्राष्ट्रीय स्थायित्व कोष (ISF) के गठन का सुझाव दिया।

इन दोनों योजनाओं को अलग-अलग देखा जाये तो केन्स योजना में एक अन्तर्राष्ट्रीय बैंकिंग व्यवसाय को स्थापित करने का सुझाव था जबकि ह्वाइट योजना एक कोष के निर्माण से था। जिससे भुगतान शेषों में संतुलन स्थापित हो सके और विनिमय दर को स्थिर रखकर विदेशी व्यापार को प्रोत्साहित किया जा सके।

Scanned with CamScanner

1944 में अमेरिका ~~तथा ब्रिटेन~~ ब्रिटेन के ब्रेटनवुड्स नामक स्थान पर 44 राष्ट्रों के प्रतिनिधियों का सम्मेलन बुलाया गया जिसमें भारत ने भी अपनी भागीदारी दिखायी। इस सम्मेलन में विचार-विमर्श के बाद एक योजना स्वीकृत हुई। जिसे ब्रेटनवुड्स समझौता के नाम से ~~जाने~~ ~~जा~~ प्रसिद्ध हुआ। समझौते के परिणाम-स्वरूप दो अन्तर्राष्ट्रीय मौद्रिक संस्थाओं की स्थापना की गयी —

① अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (I.M.F)
② अन्तर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण एवं विकास बैंक (IBRD)

अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के मुख्य उद्देश्य :—

① अन्तर्राष्ट्रीय मौद्रिक सहयोग - मुद्रा कोष का सबसे

महत्वपूर्ण उद्देश्य संस्था के द्वारा अपने सदस्य देशों के बीच मौद्रिक संबंध स्थापित करना है। इस उद्देश्य को पूरा करने में कभी कोई त्रुटी न हो जाये इसलिए कोष के विशेषज्ञों की एक कमेटी द्वारा नियमित रूप से सुझाव भी दिया जाता है।

(2) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के संतुलित विकास को प्रोत्साहन

अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष व्यापार के संतुलित विकास को प्रोत्साहित करने और सदस्य देशों में रोजगार के उच्च स्तर को स्थापित करने के लिए अपनी भूमिका निभाता है। कोष के प्रावधान के अनुसार कोई भी सदस्य राष्ट्र कोष की अनुमति के बिना अन्तर्राष्ट्रीय लेन-देन पर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगा सकता है।

Scanned with CamScanner

(3) विनिमय दरों में स्थायित्व - अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की स्थापना का उद्देश्य विनिमय दरों में स्थिरता लाना भी है। यदि किसी देश में विनिमय दर में कमी होने की संभावना हो जाती है तो कोष उस देश को उचित सहयोग एवं सुझाव देता है।

(4) बहुपक्षी भुगतान - कोष उद्देश्य सदस्य देशों के बीच विभिन्न देशों के विनिमय नियंत्रणों को समाप्त कर सम्बन्धित बहुपक्षी भुगतान की व्यवस्था में सहयोग करना है।

(5) आर्थिक सहायता करना - गरीब सदस्य देशों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए मुद्रा कोष अल्पकालीन ऋण देकर उन्हें आर्थिक सहायता करता है। जिससे सदस्य देशों का भुगतान संतुलन ठीक रहता है।

(6) असंतुलन की अवधि तथा मात्रा - अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष का उद्देश्य सदस्य देशों के प्रतिकूल भुगतान संतुलन की अवधि एवं इसकी मात्रा को न्यूनतम करने का प्रयास करना है।

— x —

Scanned with CamScanner